Course : B.A (Education Hons), Part-I

Paper : II (Development of Education in India)

Prepared by : Dr. Meena Kumari

Topic : Education During Buddhist Periond

बौद्ध कालीन शिक्षा (Education During Buddhist Period)

भारत में वैदिक शिक्षा के बाद एक महत्वपूर्ण शिक्षा का उदय छठी शताब्दी ईसा पूर्व काल में हुआ था जिससे बौद्ध कालीन शिक्षा के नाम से जानते हैं। बौद्ध काल में शिक्षा के अर्थ शिक्षा व्यवस्था कोमा पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि इत्यादि को समझने के लिए पहले बौद्ध धर्म को समझना होगा। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुध थे। महात्मा बुध का काल 563 ईसा पूर्व से 483 साल पूर्व तक माना जाता है। महात्मा बुद्ध 7 वर्षीय छत्रिय थे उनका मानसिक सुख में नहीं लगता था वह घर छोड़कर निकल गए थे और ज्ञान की प्राप्ति के लिए भटकते रहे ।एक दिन 12 वर्ष की तपस्या के बाद बरगद पेड़ के नीचे परम ज्ञान की प्राप्ति हुई तभी से उनका नाम गौतम बुध पड़ा और वह वृक्ष के नीचे उनको ज्ञान प्राप्त हुआ ।

बौद्ध धर्म: विश्व के प्रमुख धर्मों में से एक बौद्ध धर्म है ।बौद्ध धर्म में ईश्वर के अस्तित्व को नहीं माना गया है। मूलतः यह जीवन जीने का एक दृष्टिकोण था परंतु निर्वाण तथा परमार्थ के कारण इसको धर्म की संज्ञा दी गई। बौद्ध धर्म को जानने का माध्यम बौद्ध साहित्य है। वह खुद किसी ग्रंथ की रचना नहीं किए थे।उनके उपदेशों को संकलित कर उन्हें बौद्ध साहित्य की संज्ञा दी गई है। मुख्यतः इन साहित्य को तीन भागों में बांटा गया है।

1) विनय पिटक- इसमें विचार संबंधी नियमों का विवरण है।

2) सुक्त पिटक- इसमें बुद्ध के उपदेशों एवं बातों को संकलित किया गया है।

3) **अभिधमम पिटक - इसमें बुध के दार्शनिक विचारों का संग्रह है इन ग्रंथों की भाषा पाली है। धार्मिक मतभेद के कारण बौद्ध धर्म दो भागों में बट गया जिसे हिनयान और महायान के नाम से जाना जाता है।**

बौद्ध धर्म तीन तत्वों पर मुख्य रूप से आधारित है

१) **चार आर्य सत्य (** The four noble truths)- **चार आर्य सत्य में दुख, समुदाय, विरोध तथा मार्ग आता है। मार्ग के अंतर्गत अष्टांगिक मार्ग का वर्णन है जिसमें सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाचा, सम्यक कर्म, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति तथा सम्यक समाधि**

२) **अष्टांगिक मार्ग-महात्मा बुद्ध ने दुख के निवारण के लिए मध्यम मार्ग का अनुसरण करना बताए हैं। यह लौकिक जीवन से संबंधित था!**

३) **चार मूल दार्शनिक सिद्धांत- बौद्ध धर्म चार मूल सिद्धांतों पर आधारित है यह सिद्धांत है कि प्रतीत्व समुत्पाद, कर्मवाद, नश्वरता तथा अनात्मवाद।**

भगवान बुद्ध के उपदेश-भगवान बुद्ध के सिद्धांतों में चार सत्य तथा स्टांग के अलावे मध्य मार्ग की चर्चा की गई है वे समानता तथा अहिंसा पर भी जोर दिए थे।

<u>बौद्ध कालीन शिक्षा की विशेषताएं</u>

बौद्ध कालीन शिक्षा की विशेषताएं निम्नलिखित है: -

१) उद्देश्य -बौद्ध कालीन शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्य थे प्रथम निर्वाण प्राप्ति के लिए, चरित्र निर्माण, बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार, सामाजिक कुशलता बढ़ाना तथा भिक्षु तैयार करने का उद्देश्य थे। नैतिक मूल्यों पर भी जोर दिया गया था।

२) विद्या संस्कार-बौद्ध कालीन शिक्षा का प्रारंभ संस्कार से होता था। 8 **वर्ष की आयु से बालक मठ जा कर ज्ञान ग्रहण करता था तथा उसके उपरांत वह बौद्ध मठ में ही रहता। ' प्रवज्या ' के बाद बालक 'सामनेर' कहलाता था। प्रव्रज्या का इच्छुक बालक सिर के बाल बुलाकर तथा पीले वस्त्र पहनकर भिक्षु के चरणों में माथा टेककर शरण लेता था।**

3) **छात्रों की दिनचर्या- बौद्ध काल की दिनचर्या अत्यधिक कठिन थी। छात्र अनुशासन में रहते थे। प्रातकाल गुरु के दंटवाधन, स्नान इत्यादि नित्य कर्मों की व्यवस्था करने के उपरांत छात्र गन भोजन की व्यवस्था करते थे। सामनेर को** 10 **आदेशों का पालन करना आवश्यक था। इन आदेशों को अर्थात** 10 **सिक्खा पदानी कहते थे।**

4) शिक्षा संस्थाएं- बौद्ध काल में शिक्षा का स्वरूप संस्थागत हो गया था उनमें राम छात्रों को शिक्षा बौद्ध मठों में दी जाती थी। यह बौद्ध मठ प्राय: नगरों की कोलाहल से दूर पर्वत विशाल सुंदर व सुविधा युक्त होते थे। नालंदा तथा तक्षशिला बौद्ध काल की सर्वाधिक उल्लेखनीय शिक्षा संस्थाएं थी।

5) **पाठ्यक्रम - बौद्ध कालीन शिक्षा में बौद्ध धर्म को पाठ्यक्रम में मुख्य स्थान प्राप्त था। बौद्ध काल में शिक्षा दो भागों में विभक्त थी - प्रारंभिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा। प्रारंभिक शिक्षा के अंतर्गत लिखना पढ़ना तथा साधारण गणित सिखाया जाता था। उच्च शिक्षा के अंतर्गत धर्म-दर्शन, इतिहास, भाषा, साहित्य, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, सेब कला, चित्रकला, सैनिक शिक्षा का अध्ययन होता था।**

6) **शिक्षण विधि - वैदिक कालीन शिक्षा के समान बौद्ध काल में मैट्रिक शिक्षण कार्य होता था। प्रश्नोत्तर, विचार विमर्श, वाद-विवाद, देशाटन आदि के द्वारा शिक्षण प्रदान की जाती थी। शिक्षण कार्य पाली या प्राकृत भाषा में होता था**

7) **छात्र अध्यापक संबंध- छात्र अध्यापक संबंध मधुर तथा स्नेह पूर्ण होते थे। अध्यापक पुत्र छात्र का ध्यान रखता था। अध्यापकों के प्रति उत्तरीय श्रद्धा भक्ति का भाव रखते थे।**

8) **अनुशासन व दंड व्यवस्था- बौद्ध कालीन शिक्षण व्यवस्था में सभी सामने रो के लिए बौद्ध मठ के नियमों व अनुशासन पालन करना अनिवार्य होता था।**

मठ के नियमों का उल्लंघन करने पर छात्रों को बौद्ध मठ से निष्कासित कर दिया जाता था।

9) नारी शिक्षा- प्रारंभिक वर्षों में स्त्रियों को बौद्ध मठों में प्रवेश नहीं दिया गया था। परंतु बाद में महिलाओं को भिक्षुणी के रूप में प्रवेश दिया जाने लगा। भिक्षुणी के लिए अलग बट की व्यवस्था थी वे एकांत में भिक्षुक से शिक्षा नहीं ग्रहण कर सकते थे।

10) **उपसंपदा संस्कार- बौद्ध मठ में** 12 **वर्ष की शिक्षा समाप्त करने पर उप संपदा संस्कार होता था। उप संपदा संस्कार के उपरांत सामनेर पूर्ण विकसित बन जाता था तथा उनका गृहस्थ जीवन से कोई संबंध नहीं रहा जाता था। उप संपदा प्राप्त भिक्षुक बौद्ध मठ की स्थाई सदस्य बन जाता था।**

11) **वित्त व्यवस्था - बौद्ध काल में शिक्षा व्यवस्था ने संस्थागत रूप ले लिया था। इसलिए उसके लिए अच्छी तरह से संगठित व सीधे आर्थिक व्यवस्था परम आवश्यक थी । राजकीय सहायता, धर्मस्व, उपहार, दान, शिक्षा, तथा शुल्क की सहायता से बौद्ध मठों का खर्चा चलता था।**